Newspaper : Nai Duniya
Edition: Chhattisgarh | Date: 8th August, 2019

पेंड्रा ब्लॉक के मुरमुर में पढ़ने वाले आदिवासी बच्चों का प्रधान पाठक मरावी रख रहे खास ख्याल

नर्सरी की सब्जियां व फल खाते हैं आदिवासी बच्चे

राधाकिशन शर्मा
बिलासपुर। नईदुनिया

वन क्षेत्र पेंड्रा ब्लॉक के ग्राम मुरमुर के प्राइमरी स्कूल के प्रधान पाठक टिकाराम मरावी आदिवासी बच्चों का भविष्य संवार रहे हैं। आदिवासी बहुल गांव के सरकारी स्कूल में पढ़ने वाले बच्चों के स्वास्थ्य का भी बराबर ख्याल रखा जा रहा है। स्कूल परिसर में किचन गार्डन के बजाय प्रधान पाठक व शिक्षकों ने मिलकर नर्सरी विकसित कर दिया है। मध्यान्ह भोजन के दौरान बच्चे नर्सरी की हरी सब्जियां खाते हैं। भोजन के बाद इनको मौसमी फल भी दिया जाता है ताकि बच्चों का स्वास्थ्य अच्छा रहे और सुपोषित रहकर पढ़ाई के प्रति अपना ध्यान लगा सके । खास बात ये कि इसके लिए हेड मास्टर मरावी को किसी तरह की सरकारी मदद नहीं मिलती । वे अपने वेतन के पैसे से स्कूल का कायाकल्प तो किया ही साथ ही नर्सरी में हरी सब्जियों के अलावा फलदार पौधे भी लगाया है।

वनग्राम मुरमुर के स्कूल भवन और यहां की नर्सरी में रंग बिरंगे फूलों के अलावा फलदार पौधे और हरी सब्जियां की खेती को लेकर ऐसा नहीं लगता कि यह सरकारी स्कूल है। निजी स्कूलों में इतनी व्यवस्थित नर्सरी देखने को नहीं मिलती। यह कमाल यहां पदस्थ हेडमास्टर मरावी और उनके सहयोगियों शिक्षकों ने किया है। हरी सब्जियों के अलावा फलों के पौधों से नर्सरी हरी भरी दिखाई दे रही है। आदिवासी बालिकाओं के लिए प्रधान पाठक मरावी व उनका स्टॉफ किसी मसीहा से कम नहीं है । आदिवासी बालिकाओं को पढ़ा लिखाकर अपने पैरों पर खड़ा होने लायक बनाने हेड मास्टर की अगुवाई में शिक्षक व स्टॉफ मन लगाकर काम कर रहे हैं। वेतन की आधी राशि तो खर्च कर ही रहे हैं। साथ ही पालकों व ग्रामीणों को भी शिक्षा और स्वास्थ्य का महत्व भी समझा रहे हैं। आदिवासी ग्रामीण जिनका पढ़ाई और अक्षर ज्ञान से कोई वास्ता नहीं है वे अपने बच्चों को अपना पेट काटकर स्कूल भेज रहे हैं और उनकी पढ़ाई का इंतजाम भी कर रहे हैं। स्कूल भवन को देखकर यह नहीं लगता कि दूरस्थ वनांचल में किसी सरकारी स्कूल की तस्वीर कुछ इस तरह हो सकती है। स्कूल की दीवारों पर भरपूर शिक्षण सामग्री के अलावा परिसर की साफ–सफाई देखकर ऐसा लगता है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की स्वच्छता अभियान की असली तस्वीर मुरमुर स्कूल परिसर में ही दिखाई देती है।

स्कूल परिसर में फूलों के इतने पौधे किसी प्राइवेट नर्सरी में भी देखने को नहीं मिलते। विज्ञान के उपकरणों को कुछ इस अंदाज में रखा गया है । शिक्षा के प्रति बच्चों में उत्सुकता जगाने विज्ञान के उपकरणों को कुछ खास अंदाज में सजा कर रखा गया है। इसके पीछे कम से कम संसाधनों में बच्चों को अधिक आउटपुट देना माना जा रहा है।

बिलासपुर। स्कूल की नर्सरी में लगाए गए केले व पपीते के पौधे के साथ हरी सब्जियां।

हरी सब्जियों की भरपूर खेती

स्कूल के नर्सरी में गोभी के सैकड़ों पौधों के अलावा मेथी, लाल भाजी, लहसुन, अदरक, मिर्च, आलू, सेमी, बरबट्टी, भिंडी, टमाटर सहित अन्य सब्जियां लगी हुई है। खास बात ये कि मध्यान्ह भोजन में किचन गार्डन की हरी सब्जियां बच्चियां खाती है। हरी सब्जियों को भरपूर मात्रा में बालिकाओं को खिलाया जाता है। भोजन के वक्तशिक्षक व पूरा स्टॉफ मौजूद रहते हैं ।सब्जियों के अलावा नर्सरी में पपीता,केला,आम,मुनगा,अमरूद,जामुन सहित अन्य फलदार पेड़ भी लगे हुए हैं।

> बच्चों में शिक्षा के प्रति आकर्षण पैदा करने के लिए कुछ नया करने के लिहाज से ऐसा किया जा रहा है। वनवासी बालिकाएं पढ़ लिखकर आगे बढ़े इस उद्देश्य को लेकर कार्य किया जा रहा है। आदिवासी बच्चों के स्वास्थ्य का भी पूरा–पूरा ख्याल रखा जा रहा है। नर्सरी की हरी सब्जियां बच्चे मध्यान्ह भोजन में खाते हैं। भोजन के बाद फल भी दिया जाता है।
>
> **–टिकाराम मरावी**
> प्रधान पाठक, प्राथमिक शाला मुरमुर